Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

महिला सशक्तिकरण और भारतीय सिनेमा

पूनम शर्मा
शोधार्थी
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय कलबुर्गी
हिंदी विभाग

शोध सार

सशक्तिकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो लोगों को उन कारकों पर नियंत्रण रखने में मदद करती है जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण का अर्थ है उन्हें जागरूक व्यक्तियों के रूप में विकसित करना, जो राजनीतिक रूप से सक्रिय हों, आर्थिक रूप से स्वतंत्र हों और अपने जीवन से जुड़े निर्णयों को समझदारी से ले सकें।

प्रस्तावना

सिनेमा मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है। भारतीय सिनेमा ने ऐसे कई महिला पात्रों को पर्दे पर उतारा है जिन्होंने पूरे समाज को प्रेरित किया। 1950 के दशक से ही नर्गिस दत्त जैसी अभिनेत्रियों ने सशक्त भूमिकाएँ निभाईं—चाहे वह 'आवारा' में एक वकील की भूमिका हो, 'श्री 420' में एक शिक्षिका की, या 'मदर इंडिया' में एक संघर्षशील किसान की।

दशकों से हिंदी सिनेमा देश के बदलते हालातों का दर्पण रहा है। एक समय था जब महिलाओं को केवल सजावटी वस्तु या 'बेचारी' के रूप में दिखाया जाता था, लेकिन आज वे आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए लड़ने वाली 'सशक्त महिला' बन चुकी हैं।

बीज शब्द (Keywords): सशक्तिकरण, फिल्में और महिलाएं, बॉलीवुड, समाज, जेंडर (लिंग)।

मूल आलेख

पिछले कुछ वर्षों में, बॉलीवुड ने ऐसी कई फिल्में दी हैं जो महिलाओं की बदलती भूमिका को दर्शाती हैं। जहाँ कभी-कभी औपचारिक शिक्षा आधुनिक विचारों को सिखाने में विफल रहती है, वहीं सिनेमा ने रूढ़िवादी मानसिकता को बदलने में सफलता पाई है। वर्तमान में, बॉलीवुड सामाजिक मुद्दों, विशेषकर महिला सशक्तिकरण के प्रति अधिक संवेदनशील हुआ है। प्रसिद्ध अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं ने महिलाओं के खिलाफ होने वाली सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए कई अभियान भी चलाए हैं। आधुनिक फिल्में महिलाओं को स्वतंत्र, आत्मविश्वासी और करियर के प्रति जागरूक दिखाती हैं। यह लेख भारतीय सिनेमा में महिलाओं की तेज़ी से बदलती भूमिका पर प्रकाश डालता है।

प्रमुख फिल्में जो महिलाओं को 'नायक' के रूप में दर्शाती हैं:

— **मदर इंडिया (1957)**: यह भारतीय सिनेमा की एक कालजयी फिल्म है। इसमें नर्गिस दत्त ने 'राधा' की भूमिका निभाई, जो अपने सिद्धांतों के लिए अपने अनैतिक बेटे को भी मार देती है। वह न्याय और शक्ति का प्रतीक बनकर उभरती हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

- **अर्थ (1982):** महेश भट्ट द्वारा निर्देशित यह फिल्म महिला सशक्तिकरण की एक मजबूत अपील है। शबाना आज़मी ने इसमें एक ऐसी महिला (पूजा) का किरदार निभाया, जो पति द्वारा धोखा मिलने के बाद अपनी पहचान की तलाश में अकेले जीने का फैसला करती है और स्वावलंबन का रास्ता चुनती है।

- **बैंडिट क्वीन (1994)**: यह फिल्म भारतीय डाकू फूलन देवी के जीवन पर आधारित एक जीवनी है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे निचली जाति से होने के कारण उन्हें समाज में यौन भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। पुरुषों द्वारा किए गए अत्याचारों के खिलाफ वह डटकर लड़ती हैं और अंततः एक शक्तिशाली महिला के रूप में उभरती हैं, जो आगे चलकर संसद सदस्य (MP) भी बनीं।

- **चांदनी बार (2001):** यह फिल्म अंडरवर्ल्ड, वेश्यावृत्ति और बार डांसर्स के जाल में फंसी महिलाओं के संघर्षपूर्ण जीवन को दर्शाती है। तब्बू ने 'मुमताज' की मुख्य भूमिका निभाई है, जो अपने बच्चों को एक बेहतर भविष्य देने और अपनी परिस्थितियों को सुधारने के लिए कड़ा संघर्ष करती है।

- **चक दे! इंडिया (2007):** यह फिल्म भारतीय सिनेमा में इसलिए खास थी क्योंकि यह महिला हॉकी टीम पर आधारित पहली बड़ी फिल्म थी। इसने समाज को उन लड़कियों की कहानी दिखाई जो अपने सपनों का पीछा करने के लिए किसी भी बाधा से नहीं रुकतीं। यह फिल्म नारीवाद का एक बेहतरीन उदाहरण है, जहाँ शाहरुख खान का किरदार यह दिखाता है कि एक पुरुष महिलाओं को समानता की दृष्टि से कैसे देख सकता है।

- **नो वन किल्ड जेसिका (2011)**: यह जेसिका लाल हत्याकांड की वास्तविक घटना पर आधारित है। विद्या बालन ने जेसिका की बड़ी बहन की भूमिका निभाई है, जो एक अमीर और प्रभावशाली व्यक्ति के खिलाफ न्याय की लड़ाई लड़ती है। यह फिल्म दर्शाती है कि कैसे एक आम महिला सभी बाधाओं से ऊपर उठकर व्यवस्था से टकरा सकती है और न्याय पा सकती है।

- **इंग्लिश विंग्लिश (2012):** इस फिल्म की कहानी 'शशि' (श्रीदेवी) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक कुशल गृहिणी और माँ है, लेकिन अंग्रेजी न बोल पाने के कारण परिवार में अपमानित महसूस करती है। फिल्म का मोड़ तब आता है जब वह अपनी कमजोरी को ताकत बनाती है। वह अंग्रेजी सीखकर न केवल समाज में अपना स्थान बनाती है, बल्कि खुद की नजरों में और परिवार की नजरों में सम्मान भी प्राप्त करती है।

- **मैरी कॉम (2014):** यह फिल्म मशहूर भारतीय मुक्केबाज मैरी कॉम के वास्तविक जीवन पर आधारित है, जिसे प्रियंका चोपड़ा ने बखूबी निभाया है। फिल्म उनके कड़े संघर्षों को चित्रित करती है। विवाह और दो बच्चों के होने के बाद भी मैरी कॉम ने अपना करियर जारी रखा और भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतकर महिला सशक्तिकरण की एक अद्भुत मिसाल पेश की।

- **पीकू (2015):** बॉलीवुड की यह सुपरहिट फिल्म आज की कामकाजी महिलाओं की वास्तविक स्थिति पर आधारित है। इसमें दीपिका पादुकोण ने एक युवा और स्वतंत्र महिला के जीवन के उतार-चढ़ाव को बखूबी दिखाया है। फिल्म दर्शाती है कि कैसे वह अपने व्यक्तिगत जीवन (पारिवारिक जिम्मेदारियों) और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती है।

- **पिंक (2016)**: भारतीय सिनेमा में 'पिंक' महिला सशक्तिकरण की एक ऐतिहासिक फिल्म मानी जाती है। अमिताभ बच्चन के दमदार संवादों के माध्यम से इस फिल्म ने पूरे देश को महिला के 'निर्णय की शक्ति' से अवगत कराया। फिल्म का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह था कि "जब एक महिला 'ना' कहती है, तो उसका मतलब 'ना' ही होता है।" यह फिल्म समाज को बताती है कि किसी को भी महिला की इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेने का अधिकार नहीं है।

- **लिपस्टिक अंडर माय बुर्का (2017):** यह फिल्म चार अलग-अलग महिलाओं के जीवन और उनके संघर्षों पर आधारित है। यह आधुनिक युग की एक निडर नारीवादी फिल्म है, जो महिलाओं की 'आजादी की जरूरत' को समाज के सामने एक आईने की तरह पेश करती है। यह फिल्म महिलाओं के सपनों, इच्छाओं और सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व पितृसत्तात्मक बेड़ियों से मुक्ति की मांग को खुले तौर पर व्यक्त करती है।

- **सांड की आँख (2019)**: भारतीय सिनेमा की यह फिल्म दो बुजुर्ग महिलाओं, चंद्रो तोमर (भूमि पेडनेकर) और प्रकाशी तोमर (तापसी पन्नू) के जीवन के अंतिम पड़ाव में उनके सशक्तिकरण को दिखाती है। यह बॉलीवुड की सबसे प्रेरक फिल्मों में से एक है। इसमें 'शूटर दादी' न केवल अपनी पोतियों को प्रेरित करती हैं, बल्कि पूरे समाज को यह संदेश देती हैं कि अपने ही घर के पुरुषों की रूढ़िवादी मानसिकता से कैसे लड़ा जाता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

ऊपर दिए गए बॉलीवुड फिल्मों के विभिन्न उदाहरण यह स्पष्ट करते हैं कि आज की फिल्में महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त संदेश दे रही हैं। ये फिल्में दिखाती हैं कि महिलाएं अपनी रक्षा करने में स्वयं सक्षम हैं और उन्हें संकट से उबरने या दुख में सांत्वना पाने के लिए किसी पुरुष के सहारे की आवश्यकता नहीं है। बॉलीवुड के कई निर्देशकों ने विभिन्न अभिनेत्रियों के माध्यम से स्त्री-पुरुष समानता के अनेक उदाहरण पेश किए हैं। भारतीय सिनेमा में महिलाओं द्वारा निभाए गए ये किरदार समाज की अन्य महिलाओं के लिए 'रोल मॉडल' (आदर्श) का कार्य करते हैं। इन फिल्मों ने आम महिलाओं को खुद को इन शक्तिशाली पात्रों से जोड़ने का अवसर दिया है।

ये सशक्त महिलाएं उस 'नई नारी' की छवि का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अब दब्बू नहीं, बल्कि मुखर है और समानता के नए समीकरण बनाने का प्रयास कर रही है।सपनों की तलाश: वे अपने तरीके से अपने सपनों को पूरा करना चाहती हैं और सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा शारीरिक बेड़ियों से मुक्ति की आकांक्षी हैं।अधिकार और जागरूकता: वे अपनी 'अंतरात्मा की आवाज' सुनती हैं और समाज में वर्जित माने जाने वाले विषयों (जैसे यौन इच्छाएं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता) पर खुलकर या परोक्ष रूप से अपनी बात रखती हैं।बाधाओं का अंत: अब उनका ग्रामीण या शहरी परिवेश उनके सशक्तिकरण के मार्ग में बाधा नहीं बनता। वे हर परिस्थिति में अपनी पहचान बनाने के लिए तत्पर हैं।

संक्षेप में: भारतीय सिनेमा अब महिलाओं को केवल एक 'सहयोगी' के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में चित्रित कर रहा है, जो समाज की सोच को बदलने की शक्ति रखती हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय सिनेमा अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली संवाहक बन चुका है। दशकों तक 'अबला नारी' की रूढ़िवादी छवि पेश करने के बाद, आज का बॉलीवुड महिलाओं को एक नए और आत्मनिर्भर रूप में चित्रित कर रहा है। पिंक', 'थप्पड़' और 'लिपस्टिक अंडर माय बुर्का' जैसी फिल्मों ने पितृसत्तात्मक सोच, सहमति (Consent) और महिलाओं की व्यक्तिगत इच्छाओं जैसे वर्जित विषयों पर खुलकर बात की है । सिनेमा अब महिलाओं को केवल घरेलू दायरे तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें खेल, राजनीति, व्यापार और न्याय की लड़ाई लड़ते हुए दिखाता है। यह बदलाव स्त्री-पुरुष समानता के नए समीकरण गढ़ रहा है। हिंदी सिनेमा अब महिलाओं को केवल 'ग्लैमर' या 'त्याग की प्रतिमूर्ति' के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में देख रहा है। हालाँकि अभी लंबा सफर तय करना बाकी है, लेकिन फिल्मों के माध्यम से बदली जा रही यह सामाजिक चेतना एक अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की नींव रख रही है।

संदर्भ सूची

1. **स्कूपव्हूप (ScoopWhoop):** https://www.scoopwhoop.com
2. **न्यूज़18 (News18):** https://www.news18.com
3. **द टेलीग्राफ इंडिया (The Telegraph India):** https://m.telegraphindia.com
4. **फिल्मफेयर (Filmfare):** https://m.filmfare.com
5. **द इकोनॉमिक टाइम्स (The Economic Times):** https://m.economictimes.com
6. **हार्पर बाजार (Harper's Bazaar):** https://www.harpersbazaar.com
7. **थापन, मीनाक्षी:** *लिविंग द बॉडी: एम्बॉडीमेंट, वुमनहुड एंड आइडेंटिटी इन कंटेंपरेरी इंडिया* (शरीर को जीना: समकालीन भारत में अवतार, स्त्रीत्व और पहचान), नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड; वर्ष 2009।
8. **बागची, अमिताभ:** *वुमेन इन इंडियन सिनेमा* (भारतीय सिनेमा में महिलाएँ); वर्ष 1996। स्रोत: bagchi/women.html से प्राप्त।